डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन का आयोजन

मातृभाषा हमारी माँ के समान है और उसकी सुरक्षा हमारा कर्तव्य – पद्मा सचदेव

21 फरवरी 2018। नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आज एक बहुभाषी कवि सम्मिलन आयोजित किया गया। बहुभाषी कवि सम्मिलेन में 23 भारतीय भाषाओं के कवियों को आमंत्रित किया गया था। प्रख्यात डोगरी कवयित्री पद्मा सचदेव ने इस सम्मिलन का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि मातृभाषा हमारी माँ के समान है और उसकी सुरक्षा हमारा कत्तर्व्य है। उन्होंने इस बात पर दुख प्रकट किया कि नई पीढ़ी अपनी मातृभाषा को प्रयुक्त नहीं कर रही है, जिसके कारण उनके लुप्त होने का ख़तरा बढ़ता जा रहा है। डोगरी के प्रख्यात कवि दीनू भाई पंत की पंक्ति को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि डोगरी हमारी माँ है तो हिंदी हमारी दादी। उन्होंने डोगरी में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं और कुछ डोगरी कविताओं के हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि मातृभाषा से हमारी सांस्कृतिक पहचान बनती है और वह ही हमारी संस्कृति और संस्काररों की संवाहक है। साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अन्य वाचिक और क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है।

सभी आमंत्रित कवियों ने एक कविता अपनी मूल भाषा में प्रस्तुत कीं और अन्य कविताओं के हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। कविता–पाठ करने वाले कवि/कवयित्री थे – जीबन नारा (असमिया), देवकांत रामचियारी (बोडो), गणेश बिसपुते (मराठी), अनामिका (हिंदी), तहसीन मुनव्वर (उर्दू), सुजाता चौधरी (ओड़िया), मोहन हिमथाणी (सिंधी), प्रतिभा नंद कुमार (कन्नड), मालचंद तिवाड़ी (राजस्थानी), हरीश मीनाश्रु (गुजराती), अरिबम मेम्चोबी (मणिपुरी), फेलोमिना सेम्फ्रांसिस्को (कोंकणी), उत्तम कुमार क्षेत्री (नेपाली), वनीता (पंजाबी), याकूब (तेलुगु), अनीता थम्पी (मलयाळम्), रमन कुमार सिंह (मैथिली), रवि सुब्रमण्यन (तमिळ), गोबिंद चंद्र माझी (संताली) और रमाकांत शुक्ल (संस्कृत)।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in